

भारतीय संगीत मे राग ऋतू संबंध : रस भाव के परिप्रेक्ष में एक अभ्यास**अस्सो. प्रो. डॉ. योगिनी बी. सोनटक्के**

Dept. of music

Late. Chhaganlal Muljibhai Kadhi Kala,
Mahavidyalay, Achalpur Camp, Paratwada.
Dist Amravati Maharashtra-444805
Email:-yogini1975@gmail.com**संक्षेप :-**

भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार राग है ।, जो केवल स्वरों का समुह नहीं बल्कि भाव, रस और प्रकृति से जुड़ा एक सजीव अनुभव है। रस के गुण रंजकत्व का वर्णन हमारे शास्त्रों में उपलब्ध है राग संगीत की आत्मा है आज भी हमारे संगीत में राग का यह गुण मान्य है।

रागों का चयन प्राचीन काल से ही ऋतुओं और समयों के अनुसार किया जाता रहा है। प्रत्येक राग विशेष ऋतु या समय के अनुसार विशेष भाव और रस (Aesthetic essence) उत्पन्न करता है। संगीत का मूल आधार नाद है। अतः उसका महत्व रस निष्पत्ति में होना स्वाभाविक है। नाद से उत्पन्न स्वरों का रस से संबंध सर्वमान्य है। भरत से लेकर पं. भातखंडे जी तक सभी शास्त्रकारों ने समयानुसार स्वरों से संबंधित भाव तथा उससे निष्पादित रसों का वर्णन किया है। इस शोधपत्र में राग ऋतु संबंध, रागों में निहित भावात्मक पक्ष तथा संगीत में निहित सौंदर्य (रस) का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी विवेचन किया गया है। कि भारतीय संगीत किस प्रकार मानव संवेदना और प्रकृति के ताल-मेल को दर्शाता है।

किवर्डस् - (रस, राग प्रकृति, भाव, अभिरूची, अभिव्यक्ति, परिपाक, ऋतु, वैश्वीक, रहस्य प्रकृति, मनोविज्ञान)

उद्देश :-

- 1) रागों की परंपारिक ऋतु - निर्धारण परम्परा का विश्लेषण करना.
- 2) रस भाव की दृष्टि से राग प्रकृति के स्वरूप को समझना.
- 3) संगीत - प्रस्तुति और श्रोता - अनुभूति के बीच संबंध स्पष्ट करना.
- 4) परंपरा और आधुनिक दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना.

प्रस्तावना :-**सं**

गीत का प्रयोजन श्रोताओं को आनंदानुभूति कराना है

और इस आनंद की चरमावस्था ही रसास्वादन है। यह आनंद गायन वादन तथा नर्तन की आत्मा है। भारतीय संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि यह आध्यात्मिक अनुभूति और भाव अभिव्यक्ति का माध्यम है। भारतीय संगीत का ढाँचा राग, ताल और लय पर आधारित है, जिस में राग सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। रागों में निहित स्वरों के विविध रूपों द्वारा रस प्रक्रिया संभव होती है। जो भाव उत्पन्न करती है।

अपने वैश्विक संगीत के जन्म का रहस्य प्रकृति, निसर्ग से ही है। संपूर्ण जीवित सृष्टि नादमय है। कारण यह है कि कोई भी वस्तु स्थिर नहीं जिस प्रकार प्रकृति का यह प्रवास शुरू है उसी प्रकार मानवी मन की अवस्थायें भी हर क्षण बदलते रहती हैं।

राग का संबंध मानव मन की भावनाओं और प्रकृति के चक्र के साथ तथा ऋतुओं से गहराई से जुड़ा है।

जैसे बसंत में राग बसंत बहार का प्रयोग तथा, शरद में हमीर, केदार आदि राग गाये जाते हैं। वर्षा ऋतु में मेघ, मियाँ मल्हार आदि राग गाये जाते हैं।

यह परंपरा इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि संगीत का उद्भव और विकास प्रकृति एवं मानव मनोविज्ञान से जुड़ा हुआ है।

विवेचन :-

संगीत प्रकृतिक देन है। " संगीत तथा रस भाव का संबंध आधुनिक युग की कई नई देन नहीं, बहुत प्राचीन काल से यह संबंध चला आ रहा है। जिस प्रकार संगीत का आधारभूत तथा प्राप्त ग्रंथ भरत का नाट्यशास्त्र माना गया है"।

संगीत का शरीर अथवा व्यक्तित्व ही स्वरों के ताने बाने में निहित है। प्राचीन शास्त्रकारोंने तो स्वर का आवश्यक गुण अथवा तत्व में रंजकता होना माना है। आज भी संगीत का भावों तथा रसों से अटूट संबंध माना जाता है। राग का चयन, प्रस्तुति एवं अनुभव तभी पूरी तरह प्रभावित होता है जब वह अपने समय (समय पद्धती या ऋतू- पद्धती) के अनुरूप सुनाया जाए। इसे अतिरिक्त संगीत कला का उद्देश सिर्फ स्वरों का संयोजन नहीं, बल्कि श्रोता में एक आसपास की भाव- स्थिति उत्पन्न करना है। जिसे हम "Aesthetic Flavour" कहते हैं। जैसे की भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में बताया गया की, "विभव -अनुभव व्यभिचारी - समययोगाद् रस निष्पत्तिः" के सुत्रानुसार यह रस भाव की अनुभूति प्रक्रिया संगीत के रसास्वादन, अनुभव को गहरा बनाती है।

प्रकृति का भी रस भाव और स्वरों से संबंध को दर्शाती है। हमारे संत कवियों की रचनाएं एवं गायकी भाव प्रदान और रस पूर्ण होने के उदाहरण इस बात की पुष्टी करते हैं की रागों में रस भाव प्रधानता होनेसे वह प्रकृतिक रसों को दर्शाता है। हाला कि शास्त्रकारों के मतानुसार उस समय के रागों के रस आज की रागों के रस से भिन्न थे जिसका कारण रागों के स्वर तथा स्वरों के रूप की भिन्नता रहा है, परंतु रस परिपाक की धारणा उस समय प्रधान थी। वन से हिरणों का आना, पथर पिघलना, बादलों का छाना तथा वर्षा होना इस बात के उदाहरण हैं। तथा जो भावप्रधान संगीत को इंगित करते हैं उसी युग में राग रस भाव संबंधों के ही परिणाम स्वरूप रागों के रूप तथा ध्यान की कल्पनाएं की गईं। रागों की प्रकृति के अनुसार उस के ध्यान रचें गए तथा रागों के चित्र भी निर्मित किये गए।

यथा काले समारंभ गीतं भवति रंजनम्।

इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। किन्तु, स्वर एवं समर की दृष्टि से विभिन्न रागों का विश्लेषण करें, तो पता

चलेगा कि उनका गान समय अवश्य ही मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है।

राग परिभाषा एवं स्वरूप :-

रस के गुण रंजकत्व का वर्णन हमारे शास्त्रों में उपलब्ध है। मतंगमुनी के अनुसार रंजक के कारण ही राग की उत्पत्ती कही गई

" रंजनाज्जायते रागो व्युत्पत्ति समुदाहना "।

मतंग के पश्चात लेखक पं. शुभंकर के रागत्रिलोक को आनंदित करने वाले हैं। आज भी राग का रंजकत्व यह गुण सर्व मान्य है कंठ- संगीत भाव और रस का आधार राग ही होता है। राग की परिभाषा में संगीत शास्त्रकारों ने अन्य तत्वों के साथ राग की रंजक शक्ति का महत्व प्रदर्शित किया है।

"रंजक इति जन चित्तानम स राग कवितो बुधेः।"

अर्थात् जन के चित्त को रंजित करने की क्षमता जिसमें है वह राग कहलाता है। राग के शास्त्रोक्त -दस लक्षण रस निष्पत्ति में सहायक होते हैं। राग ही वह आधार है जो बिना शब्द, ताल वाद्य की सहाय्यता से भाव उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। स्वर एवं श्रुती के भाव तथा रस करने की क्षमता राग के द्वारा ही आकार और मूर्त होती है। राग के बिना स्वरों का कोई आधार नहीं होता परंतु राग निहाय स्वरों में रंजकत्व आता है। स्वरों के विविध रूपों, द्वारा रस की प्रक्रिया संभव होती है। स्वर के वादी संवादी रूप द्वारा रस की अनुभूति होती है। स्वरों के प्रस्तुतीकरण में जैसे गमक, मिंड, कण, खटका मुर्कि, आंदोलन, आदि स्वरों की संख्यानु कुल जाती संपूर्ण, पाडव तथा औडव स्वर के सप्तक तार मंद्र, मध्य आदि भेद कोमल, तीव्र जैसे विकृत स्वर रासों को प्रभावित करते हैं। स्वरों में अल्पत्व, बहुत्व, तथा राग के वादी संवादी से राग स्पष्ट तथा बदलाव होता है और रस बदल जाता है। अतः संगीत में रसकों नियंत्रित करने वाले मुख्य घटक राग निहाय स्वर होते हैं।

स्वर रस और भाव :-

- **स्वर:-** राग स्वरों से बने हैं। अतः रसों की वृष्टी मूलतः स्वरों पर निर्भर करती है। प्रत्येक स्वर का अपना स्वभाव, अपना प्रभाव होता है। संगीत में रसों को नियंत्रित और उत्तेजित करनेवाला मुख्य घटक 'स्वर' है। अथ इसी प्रकार प्रत्येक स्वर की निजी प्रकृति और स्वभाव के अनुसार षड्ज- मध्यम की प्रकृति शान्त है, ऋषभ की तीक्ष्ण, गांधार - धैवत कि गंभीर, पंचम की हर्ष चंचल, निषाद की सुकुमार " इस की

स्वरूप की दृष्टि से (आध्यात्मिक दृष्टि कोन) सात स्वरों के सात ऋषि, सात देव एवं सात छंद अनुष्टुप, बृदति, पंक्ति, अष्टिक और जगती है। मन की रागात्मक अवस्था जो उपरोक्त है। वह हमारे रागोंके लिए स्तम्भ स्वरूप है"।

स्वरों की प्रकृतिक रचना :-

कहा जाता है की संगीत विश्व की भाषा है। यह निर्मिती भगवान द्वारा ही होती है, ऐसी मान्यताये है। इसे एक वैदानीक संगीत कहाँ गया है।

- मोर द्वारा - सा
- ऋषभ द्वारा - रे
- बकरी द्वारा - ग
- कौंच द्वारा - म
- कोयल द्वारा - प
- अश्व द्वारा - ध
- हाथिद्वारा - नी

भाव - स्वर और शब्द से मानवीय भावनाओं का प्रगटीकरण :-

जो रस द्वारा मनसे उत्पन्न होते है वह भाव और स्वरोंका संबंध मानव - मन से भी है। हमारे मन का भाव सदैव एक सा नहीं रहता उदाहरण के तोर पर अपनी पुस्तक मे लक्ष्मीनारायण गर्ग जी यह स्पष्ट करते है की प्रातः सोकर उठने पर हम अपेक्षा कृत गंभीर मुद्रामे रहते है जैसे जैसे दिन चढता जाता है वातावरण मे परिवर्तन होता चला जाता है वैसे -वैसे हमारे भाव हमारा 'मुड' बदलता रहता है। रात्री को हमारा भाव वही नहीं रहता जो प्रातः रहता है। हमारे इन मनो भावों की अभिव्यक्ति के लिए स्वर भी रूप देते है और वही रूप 'राग' बन जाता है।

- प्रकृति के अष्टौर प्रहर
- सुबह के चार
- रात्री, सायंकाल के चार

स्वरों के संयोग से बने रागों को समय के अनुसार हमारे शास्त्रकारोने मुख्य तीन वर्गों में विभाजित किया है।

- 1) कोमल 'रे - ध' वाले राग
- 2) शुद्ध रे - ध वाले
- 3) कोमल ग - नि वाले राग

रागों के समय- निर्धारण मे मध्यम स्वर की भूमिका भी बहोत महत्वपूर्ण है। प्रातःकालीन रागों में शुद्ध और

सायंकालीन रागों में तीव्र मध्यम का प्रभुत्व रहता है। इस प्रकार राग समय सिद्धांतों में स्वरों कि बहोत महत्वपूर्ण भूमिका है जो समय को निर्धारित करती है।

• रस :-

रस का भाव से गहरा संबंध है। स्थायी भाव से रस उत्पन्न होता है। रस निष्पत्ती के लिए भाव, अभिनय, धर्मवृत्ती स्वर गान, आतोद्य तथा रंग सभी आवश्यक है।

"रसाभावः भिनया धर्मवृत्ति प्रवृत्तयः ।

सिद्धिस्वरास्तयातोद्यं गानं रंग च संग्रह ॥

इस प्रकार भरत के अनुसार रस प्रेक्षकों को हर्ष अथवा प्रसन्नता प्रदान करता है।

- रस का शाब्दिक अर्थ है निचोड़
- काव्य मे जो आनंद आता है वही काव्य का रस है।
- रस अंतकरण की वह शक्ती है जिसके कारण इंद्रिय अपना कार्य करती है।
- रस आनंद रूप है। और यही आनंद विशाल, विराट का अनुभव भी है।

प्रकृती मे स्थित स्वरों के स्वभाव औ नौ रस जिसका प्रयोग नवरसों द्वारा भावनाओं के प्रगटीकरण के लिये किया जाता है।

स्वर स्वभाव

- सा - तटस्थ, धिरोत्तर
- कोमल रे- करुण, दुःखी
- रे - श्रृंगार, हर्षित
- ग - मायूस, हतबल
- कोमल ग- वीर आत्मविश्वासी, घमंडी, शौर्य
- म - स्वच्छंद निर्मल
- तीव्र म - कर्कश, वृक्ष, चिडचिडा
- कोमल ध- दुदैवी, दुःखी
- ध - आर्त आनंदी
- कोमल नि- खिन्न
- नी - नोकिला, तेजस्वी
- सा - आत्मविश्वासी, तटस्थ

भारतीय संगीत मे रागऋतू संबंध :-

साहित्यकार हो या संगीतकार या चित्रकार सभी इन ऋतूओं की श्रृंगारिक प्रकृतिसे प्रेरित होकर कलात्मक सृजन की और प्रवृत्त होते है। भारतीय संगीतकार सदियों से इन सप्त स्वरोंका संबंध ले एक से एक रचना करता आ रहा है।

भारतीय ऋतूओं की रसमयी प्रकृति से यहाँ कि संगीत को और कलाओं को निश्चित ही प्रभावीत किया है। ऋतूओं का यह सौंदर्य से यहाँ की संगीत को प्रेरणाएँ प्राप्त हुई जिसके फल स्वरूप 'वसंत' और 'मेघ' रागो की उत्पत्ति हुई वंत ऋतु से 'वसंत' राग और वर्षा ऋतु से 'मेघमल्हार' आदी रागों के स्वर चित्र अंकित किये गये यहाँ की काव्य - संगीत कला सभी कि प्रायः ऋतूओं पर रचनाएँ देखने को मिलती है, परंतु तुलनात्मक दृष्टिसे देखा जाए तो वसंत और वर्षा संबंधी रचनाओं के सामने अन्य ऋतूओं की रचनाएँ बहोत कम देखी जाती है।

ऋतू और राग - रस

ऋतू	राग रस
1) वर्षाऋतू	- राग मियाँमल्हार, मेघ, गौड़ मल्हार
2) हेमंतऋतू	- राग हेमंत, भैरव, तोडी
3) शरदऋतू	- कानडा, कंस प्रकार, भूपाली, देशकार
4) शिशिरऋतू	- हमिर सोहनी
5) वसंतऋतू	- राग वसंत, हिंडोल, सरस्वती
6) ग्रीष्मऋतू	- सारंग प्रकार, दिपक (पैराणिकरूप)

1) राग और ऋतू उदाहरण में कुछ बंदीश :-

वर्षाऋतू	- मानसून
रसभाव	- आशा, उत्साह, विनीत -शीतलका, बरसात में मिलाप / विरह दोनों.
रस	- रोमांचक / श्रृंगार
गीत	- लोकगीत, बरसात संबंधी प्रेमगीत
बंदीश	- सावन घन गरजे घुम घुम बरसत शितल जल झुम झुम चातक किर कोकिला बोले हंस चकोर चहुदीस लोले नाचत बन अति करत कलोलें मोर मोर नी चूम चूम

2) बसंत :- फुलोका मौसम

रस	- श्रृंगार उल्लास नवीनता उत्सव
तत्व	- उजला, स्वरमिन्यास, चमकदार, मधुर लय
बंदीश	- कोयलिया बोले अंबुवा के डार पर ऋतू बसंत की देत संदेसवा नो कलयन पर गुंजन भवरा उनके संग करत रंग रलिया यही बसंत की देन संदेसवा

3) हेमंत - शितल

रस - शांत गंभीर, करून विरह
तत्व - भक्ति कभी कभी श्रृंगार रात्री संध्या क्षण की शांती
बंदीश - येरी आलीपिया बीन,
सखी कलना परत मोहे
घरि पल छिन दिन
जब से पिया परदेश गवन किनो
रतिया करत मोरी तारे गीन गीन

4) ग्रीष्म - गर्मी / अग्नी

तत्व - दाह, उष्ण
बंदीश - तपन लागी चहू ओर
- प्रेम करुणपूर झिल्ले अगनिया बरसत है
- शांत, भबिखी नदियाँ , सुखी बगियाँ
- शांत आनंद बिन तरसत है प्राणी
- चंचल

प्रस्तुति- श्रृंगारमय परिवर्तन :-

1) **मंचीकृत, प्रस्तुती और रेकार्डिंग का युग :-**
आधुनिक समय में 20 विसदी के उत्तरार्ध में संगीत की प्रस्तुती में गहरे परिवर्तन आये हैं। जिसका मुख्य कारण है समय मर्यादा और श्रोताओं की अभिरुची.

2) **गायक का व्यवसायिक रूप :-** राग और ऋतुओं का संबंध काफी शिथिल हो गया है अब संगीत केवल ऋतु या समय पर निर्भर नहीं किसी भी समय श्रोताओं की ऋचीके अनुसार गाये बजाये जा सकते हैं.

निष्कर्ष :-

भारतीय संगीत में राग केवल सुरों का संयोजन नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव संवेदना का सजीव संगम है। राग ऋतू-रस- भाव का यह संबंध हमारे सांस्कृतिक जीवन की आत्मा है। यह न केवल संगीत की सौंदर्यता को बढ़ाता है, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बिच सामंजस्य भी स्थापित करता है। इस प्रकार भारतीय संगीत प्रकृति का अविभाज्य अंग है। वह केवल प्रकृति का अनुकरण मात्र नहीं अपितु उसका भावात्मक प्रतिबिंब है।

आधुनिक काल में राग ऋतू का संबंध एक " सांस्कृतिक स्मृति" रूप में मौजूद है।

जब हम मेघ मल्हार सुनते हैं। तो मानसुन कि अनुभूती होती है, भले ही वह किसी अन्य मौसम में गाया जाये अर्थात ऋतू अब राग का कारण नहीं बल्कि उसकी संस्कृतिक संदर्भ

बन गया है। फिर भी पारंपारिक रागोकी संरचना मे वह भाव संवेदना आज भी विद्यमान है, जो श्रोता के भीतर उसी रस को जगा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सुची :-

- 1) पं. ओंकारनाथ ठाकूर - संगीतांजली
- 2) डॉ. शर्मा प्रेमलता - भारतीय संगीत का सौंदर्य शास्त्र
- 3) पं. वी.ना. भातखंडे - हिंदुस्थानी संगीत पद्धति
- 4) डॉ. ललिता दुग्गल - राग और रसका पारस्परिक संबंध
- 5) डॉ. राजीव वर्मा, डॉ. निलम पारीक - भारतीय संगीत का आध्यात्मिक स्वरूप अमर ग्रंथ पब्लिकेशन (दिल्ली)
- 6) लक्ष्मीनारायण गर्ग — निबंध संगीत — संगीत कार्यालय हाथरस सादन पब्लिकेशन अन्ड ओम प्रकाशन

